Click www.researchjournal.co.in/online/subdetail.html to purchase.

International Journal of Physical Education, Vol. 3 No. 1&2 (April & October, 2010) : 103-106

Article :

pk/kjh pj.k flag fo'ofo|ky;] esjB esa ch0ih0,M0 fo|kfFkZ;ksa ds O;fDrRo&izdkj dk muds xse&Lis'kykbZts'ku ds lkFk v/;;u

SAHADEV MANN, BHUPENDER KUMAR **AND** R.P. JAIN

Accepted : ***June, 2010***

See end of the article for authors' affiliations

Correspondence to:
SAHADEV MANN
Department of Physical Education, C.C.R. (P.G.) College,
MUZAFFARNAGAR (U.P.) INDIA

ABSTRACT

आज कल अखिल जगत में व्यक्तित्व, व्यक्तित्व–प्रकार एवं खेलों पर अनेक शोध कार्य सम्पन्न किये जा चुके हैं या किये जा रहे है, जिनसे खेलों के सम्बन्ध में नई–नई वैज्ञानिक बातें/तथ्य सामने आ रहे हैं और खेल दिन–प्रतिदिन वैज्ञानिक रूप धारण कर रहे है। खेलों के सम्बन्ध में दिन–प्रतिदिन ज्ञान कोष बढ रहा है। खेलों के ज्ञान कोष का आकार दिन दुना रात चौगुना बढ रहा है, जो पूर्णतया वैज्ञानिक व सटीक है। इस बात में कोई भी सन्देह नहीं है कि खेलों के इस विशाल ज्ञानकोष के उपयोग करने से खिलाडी की खेल–निष्पादन–क्षमता में अपार वृद्धि होती है। खिलाडी खेलों में अच्छा प्रदर्शन कर सकता है। अपनी कार्य क्षमता में आश्चर्यजनक सुधार/वृद्धि कर सकता है। खेल व खेलमैदान से लम्बे समय तक जुडा रह सकता है। अपने स्वास्थ्य को बनाये रख सकता हैं अपनी तकनीक में सुधार कर सकता हैं अपने खेल–कौशल को सही रूप में कर सकता है। अपने लक्ष्य कों आसानी से प्राप्त कर सकता है, आदि। परन्तु क्या इस विशाल खेल ज्ञान–कोष का सही मायने में उपयोग हो रहा है? क्या हमारी शारीरिक शिक्षा और खेलों की आने वाली पीढ़ी इसका उपयोग कर रही है? क्या उन्हे इस विशालतम खेल ज्ञानकोष की जानकारी है? उपरोक्त को वैज्ञानिक विधि से जानने के लिये शोधकर्ता ने ''चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय, मेरठ में बी0पी0एड0 विद्यार्थियों के व्यक्तित्व–प्रकार का उनके गेम–स्पेशलाईजेशन के साथ अध्ययन'' किया और पाया कि 48प्रतिशत विद्यार्थियों ने अपने व्यक्तित्व प्रकार के अनुकूल व 52प्रतिशत विद्यार्थियों ने अपने व्यक्तित्व के प्रतिकूल गेम स्पेशलाईजेशन चुना है।

''व्यक्तित्व'' को समझाना इतना सरल काम नहीं है। यह एक छोटा सा शब्द ''गागर में सागर'' को सार्थक करता है। इसे समझने व समझाने के लिये विद्वानों ने अथक प्रयास किया, परन्तु इसके पश्चात् भी इसे पूर्णतया स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिये कि इसके सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

सामान्यतः व्यक्ति के बाहय रूप को देखकर उसके बारे में राय कायम कर ली जाती हैं जैसे–जिस व्यक्ति का शरीर लम्बा व भरा हुआ होता है, नाक नक्श अच्छे हो, स्वास्थ्य अच्छा हो और आवाज रोबदार हो तो उसे अच्छा माना जाता है और यदि किसी व्यक्ति का शरीर छोटा व कमजोर हो, नाक–नक्श अच्छे न हो, शरीर बीमार व आवाज भी दबी सी होती है, तो उसे कोई भी अच्छा मानने को तैयार नहीं होता है, उसकी सब उपेक्षा कर देते है।

परन्तु उपरोक्त दृष्टिकोण सामान्य है और विद्वान उसे मान्यता नहीं देते है, क्योंकि मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि – ''मनुष्य का व्यक्तित्व इतना सीमित नहीं है कि उसे सामान्य दृष्टिकोण में आँका जा सके। उसकी परिधि पर्याप्त रूप से व्यापक है।''

वुडवर्थ का मानना है कि –''व्यक्तित्व व्यक्ति के समस्त गुणों का योग है।''

व्यक्तित्व के प्रकार

सामान्यतः व्यक्तित्व को दो भागों में विभक्त किया गया हैः–

1. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व
2. बहिर्मुखी व्यक्तित्व

vUreq[kh O;fDrRo %

इस प्रकार के व्यक्ति के लोग सदैव अपने बारे में ही सोचते है। ये अपने तक ही सीमित रहना पसन्द करते है। अपनी समस्या को केवल अपने दिमाग में ही हल करना चाहते है। इन्हे सामाजिक समारोह में बढ–चढ कर भाग लेना कतई पसन्द नहीं होता। ये प्रायः कम बोलने वाले व चिढचिढे से रहते है।

cfgeq[kh O;fDrRo%

इस प्रकार के व्यक्तित्व के लोग केवल दूसरों मे ही रूचि लेते है। सामाजिक समारोह में बढ–चढ कर हिस्सा लेते है। भाषण देने के आदि होते है। कार्य करने से पूर्व सोचना इनके बस की बात नहीं होती। ये ज्यादा बोलने वाले होते है। सामाजिक प्रवत्ति इनमें कूट–कूट कर भरी होती है।

व्यक्तित्व शब्द इतना प्रचलित है कि इस एक शब्द पर सैकडों शोध कार्य सम्पन्न किये जा चुके है, परन्तु व्यक्तित्व–प्रकार का बी0पी0 एड्0 विद्यार्थियों के गेम–स्पेशलाइजेशन के साथ